

आधुनिक परिवारों में लैंगिक भूमिकाओं पर शिक्षा, रोजगार और आर्थिक स्वतंत्रता का प्रभाव

प्रिया सिंह¹ and डॉ. सपना त्रिपाठी²

¹शोधार्थी, गृह विज्ञान-विभाग

²शोध निर्देशक, गृह विज्ञान-विभाग

सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

सारांश

आधुनिक परिवारों में लैंगिक भूमिकाओं का स्वरूप शिक्षा, रोजगार के अवसरों तथा आर्थिक स्वतंत्रता के प्रभाव से निरंतर परिवर्तित हो रहा है। पारंपरिक समाज में घरेलू कार्यों, बच्चों की देखभाल और परिवार के सदस्यों की जिम्मेदारियों को मुख्यतः महिलाओं से जोड़ा जाता था, जबकि पुरुषों को परिवार का आर्थिक पोषण करने वाला प्रमुख सदस्य माना जाता था। किंतु शिक्षा के विस्तार, महिलाओं की श्रम बाजार में बढ़ती भागीदारी, शहरीकरण, तकनीकी विकास तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता के प्रति बढ़ती जागरूकता ने इन पारंपरिक धारणाओं को चुनौती दी है। प्रस्तुत समीक्षा पत्र का उद्देश्य आधुनिक परिवारों में लैंगिक भूमिकाओं के परिवर्तन को शिक्षा, रोजगार और आर्थिक स्वतंत्रता के संदर्भ में समझना है। यह अध्ययन उपलब्ध सैद्धांतिक अवधारणाओं, पूर्ववर्ती शोधों तथा सामाजिक परिवर्तनों से संबंधित साहित्य की विषयगत समीक्षा पर आधारित है।

मुख्य संकेतक: लैंगिक भूमिकाएँ, आधुनिक परिवार, शिक्षा, महिला रोजगार, आर्थिक स्वतंत्रता, लैंगिक समानता, घरेलू श्रम, पारिवारिक निर्णय।

परिचय

लैंगिक भूमिकाएँ उन सामाजिक अपेक्षाओं, व्यवहारों और जिम्मेदारियों को संदर्भित करती हैं जिन्हें समाज महिलाओं और पुरुषों के लिए निर्धारित करता है। ये भूमिकाएँ जैविक अंतर से अधिक सामाजिक मान्यताओं, सांस्कृतिक परंपराओं, पारिवारिक संरचनाओं तथा आर्थिक परिस्थितियों से प्रभावित होती हैं। पारंपरिक पारिवारिक व्यवस्था में पुरुषों को आय अर्जित करने और बाहरी गतिविधियों में भाग लेने की जिम्मेदारी दी जाती थी, जबकि महिलाओं से खाना

बनाने, सफाई करने, बच्चों की देखभाल करने और परिवार के अन्य सदस्यों की आवश्यकताओं को पूरा करने की अपेक्षा की जाती थी। आधुनिक समाज में इन भूमिकाओं में महत्वपूर्ण बदलाव आया है। महिलाओं की शिक्षा में वृद्धि, उच्च शिक्षा तक पहुँच, रोजगार के विविध अवसर और वित्तीय संसाधनों पर उनका नियंत्रण पारिवारिक संबंधों को अधिक सहभागी बनाने की संभावनाएँ उत्पन्न करते हैं।

शिक्षा व्यक्ति की सोच, आत्मविश्वास और सामाजिक जागरूकता को विकसित करने का प्रमुख माध्यम है। शिक्षित व्यक्ति लैंगिक भेदभाव, समान अवसरों तथा अधिकारों के प्रति अधिक जागरूक हो सकता है। इसी प्रकार, रोजगार महिलाओं को आय अर्जित करने, अपनी आवश्यकताओं के लिए आर्थिक संसाधन प्राप्त करने और पारिवारिक निर्णयों में भाग लेने का अवसर प्रदान करता है। आर्थिक स्वतंत्रता का अर्थ केवल आय प्राप्त करना नहीं है, बल्कि अपनी आय और संपत्ति पर नियंत्रण, वित्तीय निर्णय लेने की क्षमता तथा आर्थिक सुरक्षा भी है। फिर भी, यह परिवर्तन सभी परिवारों में समान रूप से नहीं दिखाई देता। जाति, वर्ग, ग्रामीण-शहरी अंतर, सामाजिक मान्यताएँ और रोजगार की प्रकृति लैंगिक भूमिकाओं के परिवर्तन को प्रभावित करते हैं।

इसलिए आधुनिक परिवारों में लैंगिक समानता को समझने के लिए शिक्षा, रोजगार और आर्थिक स्वतंत्रता के पारस्परिक संबंधों का विश्लेषण आवश्यक है। प्रस्तुत समीक्षा इन तीनों कारकों के प्रभावों, सीमाओं और संभावित समाधानों पर केंद्रित है।

समीक्षा के उद्देश्य

इस समीक्षा पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. आधुनिक परिवारों में लैंगिक भूमिकाओं के बदलते स्वरूप का विश्लेषण करना।
2. शिक्षा के स्तर और लैंगिक समानता के बीच संबंध को समझना।
3. महिलाओं के रोजगार तथा आर्थिक स्वतंत्रता के पारिवारिक निर्णयों पर प्रभाव का अध्ययन करना।
4. घरेलू श्रम, बच्चों की देखभाल और पारिवारिक जिम्मेदारियों के वितरण में होने वाले परिवर्तनों की समीक्षा करना।
5. आधुनिक परिवारों में समानतापूर्ण लैंगिक संबंधों को प्रोत्साहित करने के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

समीक्षा की शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन एक वर्णनात्मक एवं विषयगत साहित्य समीक्षा पर आधारित है। इसमें लैंगिक भूमिकाओं, महिला शिक्षा, श्रम बाजार में भागीदारी, आर्थिक सशक्तीकरण और अवैतनिक घरेलू कार्य से संबंधित उपलब्ध शोध लेखों, अंतरराष्ट्रीय संगठनों की रिपोर्टें तथा सामाजिक विज्ञान साहित्य का विश्लेषण किया गया है। समीक्षा के लिए विशेष रूप से संयुक्त

राष्ट्र महिला संगठन, अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन और आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन की प्रासंगिक रिपोर्टों को आधार बनाया गया है। साहित्य का चयन विषयगत प्रासंगिकता, प्रकाशित निष्कर्षों और परिवार में लैंगिक संबंधों को समझने में उनकी उपयोगिता के आधार पर किया गया है। इसके बाद उपलब्ध साहित्य को शिक्षा, रोजगार, आर्थिक स्वतंत्रता, घरेलू श्रम और पारिवारिक निर्णय जैसे प्रमुख विषयों में वर्गीकृत किया गया है। यह प्राथमिक सर्वेक्षण या प्रयोगात्मक अध्ययन नहीं है; इसलिए इसमें कोई नया नमूना आकार, सर्वेक्षण परिणाम या सांख्यिकीय परीक्षण प्रस्तुत नहीं किया गया है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा

1. शिक्षा और लैंगिक भूमिकाओं में परिवर्तन

शिक्षा लैंगिक समानता को बढ़ावा देने वाले महत्वपूर्ण सामाजिक कारकों में से एक है। यह महिलाओं और पुरुषों को अपने अधिकारों, अवसरों तथा सामाजिक जिम्मेदारियों के बारे में जानकारी प्रदान करती है। शिक्षित महिलाएँ अपने करियर, विवाह, परिवार नियोजन और बच्चों की शिक्षा से संबंधित निर्णयों में अधिक सक्रिय भूमिका निभाने की क्षमता विकसित कर सकती हैं। इसी प्रकार, लैंगिक समानता पर आधारित शिक्षा पुरुषों को घरेलू कार्यों और देखभाल संबंधी जिम्मेदारियों में समान भागीदारी के लिए प्रेरित कर सकती है।

हालाँकि, औपचारिक शिक्षा में वृद्धि अपने आप घरेलू व्यवहार में समानता सुनिश्चित नहीं करती। यदि शिक्षित परिवारों में भी पारंपरिक सामाजिक मान्यताएँ प्रबल बनी रहती हैं, तो महिलाओं को रोजगार के साथ घरेलू जिम्मेदारियाँ भी निभानी पड़ सकती हैं। इसलिए पाठ्यक्रम, विद्यालयी वातावरण और सामाजिक शिक्षा में समानता, सम्मान तथा साझा जिम्मेदारी को शामिल करना आवश्यक है।

2. रोजगार और महिलाओं की सामाजिक स्थिति

रोजगार महिलाओं को आर्थिक संसाधनों के साथ सामाजिक पहचान, व्यावसायिक कौशल और व्यापक सामाजिक संपर्क प्रदान करता है। नौकरी करने वाली महिलाएँ परिवार की आय में योगदान देकर घरेलू आर्थिक निर्णयों में अपनी भूमिका मजबूत कर सकती हैं। रोजगार से विवाह, बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य, बचत और संपत्ति से जुड़े निर्णयों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ने की संभावना रहती है।

फिर भी, रोजगार के अवसरों की उपलब्धता और उनकी गुणवत्ता महत्वपूर्ण हैं। अस्थायी रोजगार, कम वेतन, असंगठित क्षेत्र में काम और पदोन्नति के सीमित अवसर महिलाओं की वास्तविक स्वतंत्रता को प्रभावित करते हैं।

आर्थिक स्वतंत्रता और पारिवारिक निर्णय

आर्थिक स्वतंत्रता का संबंध आय अर्जित करने के साथ-साथ बैंक खाते, बचत, संपत्ति और वित्तीय निर्णयों पर व्यक्ति के नियंत्रण से भी है। आर्थिक रूप से स्वतंत्र महिलाएँ अपनी आवश्यकताओं, शिक्षा, स्वास्थ्य, करियर और भविष्य की

योजनाओं के संबंध में अधिक सक्रिय निर्णय ले सकती हैं। इससे परिवार के भीतर संवाद, सहयोग और जिम्मेदारी के बँटवारे में परिवर्तन की संभावना बढ़ती है।

हालाँकि, व्यक्तिगत आय होना और उस आय पर नियंत्रण होना अलग-अलग स्थितियाँ हैं। यदि महिला की आय पर परिवार के अन्य सदस्यों का पूर्ण नियंत्रण हो, तो उसकी आर्थिक स्वतंत्रता सीमित रह सकती है। इसी प्रकार, रोजगार करने वाली महिलाओं के लिए घरेलू कार्यों का असमान बोझ बना रहने से वास्तविक समानता प्राप्त करना कठिन हो सकता है। इसलिए आर्थिक सशक्तीकरण का मूल्यांकन आय के साथ-साथ संसाधनों पर नियंत्रण और निर्णय लेने की स्वतंत्रता के आधार पर किया जाना चाहिए।

घरेलू श्रम और देखभाल संबंधी जिम्मेदारियाँ

आधुनिक परिवारों में महिलाओं की रोजगार भागीदारी बढ़ने के बावजूद घरेलू कार्यों का वितरण हमेशा समान नहीं हुआ है। खाना बनाना, सफाई, बच्चों की देखभाल, वृद्ध सदस्यों की सहायता और परिवार की दैनिक आवश्यकताओं का प्रबंधन अक्सर महिलाओं की जिम्मेदारी बना रहता है। इससे महिलाओं पर दोहरा कार्यभार उत्पन्न होता है, एक ओर भुगतान वाला रोजगार और दूसरी ओर अवैतनिक घरेलू श्रम।

बदलती पारिवारिक संरचना और सामाजिक मान्यताएँ

शहरीकरण, तकनीकी विकास, उच्च शिक्षा और बदलते रोजगार स्वरूप ने संयुक्त तथा एकल परिवारों की जीवनशैली को प्रभावित किया है। अनेक परिवारों में पति-पत्नी दोनों आय अर्जित करते हैं और बच्चों की शिक्षा, घरेलू खर्च, बचत तथा भविष्य की योजनाओं पर मिलकर निर्णय लेते हैं। डिजिटल बैंकिंग और ऑनलाइन शिक्षा जैसे साधनों ने महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों तथा जानकारी तक पहुँच के नए अवसर भी उपलब्ध कराए हैं।

इसके बावजूद, ग्रामीण और शहरी परिवारों में अवसरों की उपलब्धता समान नहीं है। सामाजिक वर्ग, आय, जातिगत परिस्थितियाँ, स्थानीय रोजगार और पारिवारिक परंपराएँ लैंगिक समानता को प्रभावित करती हैं। इसलिए आधुनिक परिवारों में परिवर्तन को एक समान प्रक्रिया के रूप में नहीं देखा जा सकता।

समीक्षा का तुलनात्मक सारांश

तालिका 1 में शिक्षा, रोजगार और आर्थिक स्वतंत्रता के प्रमुख प्रभावों तथा उनसे जुड़ी चुनौतियों को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है।

क्रम संख्या	प्रमुख कारक	लैंगिक भूमिकाओं पर संभावित प्रभाव	प्रमुख चुनौती
1	महिला शिक्षा	आत्मविश्वास, अधिकारों के प्रति जागरूकता और निर्णय क्षमता में वृद्धि	सामाजिक रूढ़ियाँ एवं अवसरों की असमानता

2	पुरुषों की लैंगिक समानता संबंधी शिक्षा	घरेलू कार्यों में साझा जिम्मेदारी की स्वीकृति	पारंपरिक पुरुषत्व की धारणाएँ
3	महिला रोजगार	पारिवारिक आय और सामाजिक पहचान में वृद्धि	कम वेतन, असुरक्षित रोजगार और करियर संबंधी बाधाएँ
4	आर्थिक स्वतंत्रता	वित्तीय निर्णयों और संसाधनों पर नियंत्रण की संभावना	आय पर सीमित नियंत्रण और संपत्ति संबंधी असमानता
5	घरेलू श्रम का समान वितरण	कार्यभार में संतुलन और पारिवारिक सहयोग	महिलाओं पर अवैतनिक कार्य का अधिक बोझ
6	बाल देखभाल एवं परिवार-हितैषी नीतियाँ	रोजगार और पारिवारिक जीवन में बेहतर संतुलन	सेवाओं की लागत और सीमित उपलब्धता
7	सामाजिक जागरूकता	रूढ़िवादी मान्यताओं में परिवर्तन	पीढ़ीगत और सांस्कृतिक विरोध
8	डिजिटल एवं वित्तीय साक्षरता	वित्तीय सेवाओं और रोजगार के अवसरों तक बेहतर पहुँच	डिजिटल विभाजन और कौशल की कमी

निष्कर्ष

आधुनिक परिवारों में लैंगिक भूमिकाओं का परिवर्तन शिक्षा, रोजगार और आर्थिक स्वतंत्रता से गहराई से जुड़ा हुआ है। शिक्षा व्यक्तियों में समानता की समझ विकसित करती है, रोजगार महिलाओं को आर्थिक अवसर प्रदान करता है और आर्थिक स्वतंत्रता पारिवारिक निर्णयों में उनकी भागीदारी को मजबूत कर सकती है। इसके बावजूद, पारंपरिक सामाजिक मान्यताएँ, घरेलू श्रम का असमान वितरण, रोजगार की असुरक्षा और संसाधनों पर सीमित नियंत्रण समानता की राह में बाधाएँ बने हुए हैं।

वास्तविक लैंगिक समानता प्राप्त करने के लिए महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण के साथ पुरुषों की घरेलू भागीदारी और संस्थागत समर्थन आवश्यक है। समानतापूर्ण परिवार वही है जिसमें आय अर्जित करने, घरेलू कार्य करने, बच्चों की देखभाल करने और महत्वपूर्ण निर्णय लेने की जिम्मेदारियाँ किसी एक लिंग तक सीमित न हों, बल्कि परिवार के सदस्यों की क्षमता, सहमति और परिस्थितियों के अनुसार साझा की जाएँ। इस प्रकार, शिक्षा, रोजगार और आर्थिक स्वतंत्रता को संयुक्त रूप से प्रोत्साहित करना अधिक न्यायपूर्ण, सहयोगात्मक और समावेशी पारिवारिक व्यवस्था के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

संदर्भ सूची

1. अड्डाती, एल., कैटानेओ, यू., एस्किवेल, वी., और वलारिनो, आई. (2018). भविष्य में सम्मानजनक कार्य के लिए देखभाल कार्य और देखभाल नौकरियां। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन।
2. ओईसीडी. (2019). महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण को सक्षम बनाना: विकासशील देशों में अवैतनिक देखभाल कार्य के लिए नए दृष्टिकोण।
3. संयुक्त राष्ट्र महिला. (2019). विश्व की महिलाओं की प्रगति 2019-2020: बदलती दुनिया में परिवार। लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण के लिए संयुक्त राष्ट्र इकाई।
4. संयुक्त राष्ट्र महिला. (2020). देखभाल करने का समय किसका है? कोविड-19 के दौरान अवैतनिक देखभाल और घरेलू कार्य। संयुक्त राष्ट्र महिला डेटा हब।
5. संयुक्त राष्ट्र महिला. (2023). अवैतनिक देखभाल और घरेलू कार्य में व्यतीत समय का पूर्वानुमान। संयुक्त राष्ट्र महिला डेटा हब।
6. संयुक्त राष्ट्र महिला। (2021)। सतत विकास लक्ष्यों पर प्रगति: लैंगिक स्नेपशॉट 2021। लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण के लिए संयुक्त राष्ट्र इकाई।
7. संयुक्त राष्ट्र। (2020)। विश्व की महिलाएं 2020: रुझान और आंकड़े। संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक मामलों का विभाग।
8. ओईसीडी। (2019)। महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण को सक्षम बनाना: विकासशील देशों में अवैतनिक देखभाल कार्य के लिए नए दृष्टिकोण।